भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3381

07 अगस्त, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

तमिलनाडु में जनजातीय समूहों के अधिकारों का संरक्षण

3381. श्री अ. मनि

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने तमिलनाडु में आयुर्वेद और औषधीय जड़ी-बूटियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान रखने वाले स्थानीय समुदायों, पारंपरिक चिकित्सकों और जनजातीय समूहों, विशेषकर धर्मापुरी जैसे जिलों के अधिकारों की रक्षा करने और न्यायसंगत लाभ-साझाकरण सुनिश्चित करने के लिए कोई उपाय किए हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) आयुष विनिर्माण कंपनियों, हर्बल के व्यापारियों और ऐसे ज्ञान धारकों के बीच लाभ-साझाकरण व्यवस्था को विनियमित करने के लिए स्थापित तंत्रों का, अनधिकृत वाणिज्यिक शोषण के विरूद्ध सुरक्षा उपायों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या पिछले पांच वर्षों के दौरान तमिलनाडु में पात्र समुदायों को कोई वित्तीय सहायता, रॉयल्टी, क्षमता-निर्माण कार्यक्रम या सामुदायिक विकास पहल प्रदान की गई है और यदि हां, तो तत्संबंधी जिला-वार ब्यौरा क्या है; और

(घ) सरकार द्वारा राज्य में पारंपरिक ज्ञानधारकों के लिए पारदर्शिता, कानूनी संरक्षण और निष्पक्ष मुआवजे को मजबूत करने के लिए आगे क्या कदम उठाए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (घ): आयुष मंत्रालय तमिलनाडु सहित देशभर के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के माध्यम से आयुष प्रणालियों के समग्र विकास एवं संवर्धन के लिए राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) नामक केंद्र प्रायोजित योजना का कार्यान्वयन कर रहा है। एनएएम के अंतर्गत आयुष मंत्रालय, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों द्वारा प्रस्तुत राज्य वार्षिक कार्य योजनाओं (एसएएपी) के आधार पर, राष्ट्रीय आयुष मिशन के दिशा-निर्देशों के प्रावधानों के अनुसार विभिन्न गतिविधियों हेतु उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान कर उनके प्रयासों का समर्थन करता है। चूँकि जन स्वास्थ्य राज्य का विषय है, इसलिए आयुष आधारभूत संरचना में सुधार तथा आयुष पेशेवरों के प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण का दायित्व संबंधित राज्य सरकार के अधिकार-क्षेत्र में आता है। हालाँकि, आयुष मंत्रालय की अनुसंधान परिषद्, अर्थात् केंद्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएएस), देशभर के जनजातीय क्षेत्रों में जनजातीय उपयोजना (टीएसपी) के अंतर्गत जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल अनुसंधान कार्यक्रम (टीएचसीआरपी) के माध्यम से आयुर्वेद स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती है। यह कार्यक्रम 14 राज्यों में स्थित सीसीआरएएस के 14 संस्थानों के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है, जिनमें तमिलनाडु स्थित डॉ. अचंता लक्ष्मीपति क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (एएलआरएआरआई), चेन्नई तथा कैप्टन श्रीनिवास मूर्ति केंद्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीएआरआई), चेन्नई शामिल हैं। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य जनजातीय समुदायों को

प्रत्यक्ष रूप से आयुर्वेद स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। परिषद् जनजातीय आबादी में प्रचलित स्थानीय स्वास्थ्य परम्पराओं (एलएचटी), नृजातीय औषधीय पद्धतियों (ईएमपी) तथा लोक-प्रचलित औषधीय दावों का भी प्रलेखन करती है।

यह भी उल्लेखनीय है कि केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएस) के अधीन कार्यरत सिद्ध औषधीय पादप उद्यान एवं अनुसंधान केंद्र (एसएमपीजी एंड आरसी), सलेम, तमिलनाडु द्वारा स्वास्थ्य रक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत पालामलाई पहाड़ियों की जनजातीय बस्तियों में विगत पाँच वर्षों से स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, सीसीआरएस ने लोकोपचार का ज्ञान एवं पारंपरिक चिकित्सकों के ज्ञान के प्रलेखन, उसके प्रमाणीकरण तथा ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देने के लिए आईएमआर परियोजनाओं के माध्यम से अनेक पहलें की हैं। इसी क्रम में "तमिलनाडु के धर्मपुरी जिले में औषधीय पौधों के पारंपरिक एवं सामान्य उपयोगों का सर्वेक्षण" शीर्षक से एक अध्ययन संचालित किया गया, क्योंकि भारत के तमिलनाडु राज्य का धर्मपुरी जिला विविध जनजातीय समुदायों का निवास क्षेत्र है। यह अध्ययन तमिलनाडु के धर्मपुरी जिले में निवासरत तीन जनजातीय समुदायों–मलयाली, इरुला एवं कुरुम्बा—के बीच प्रचलित चिकित्सीय-नृवंश-वनस्पति (मेडिको-एथ्नोबॉटनिकल) ज्ञान का प्रलेखन करने के उद्देश्य से तैयार किया गया था। इसका उद्देश्य विभिन्न सामान्य रोगों के उपचार में इन समुदायों द्वारा प्रयुक्त पारंपरिक औषधीय ज्ञान का अभिलेखीकरण करना था। इसके अतिरिक्त, केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएस) के अधीन कार्यरत सिद्ध औषधीय पादप उद्यान (एसएमपीजी), मेट्टूर बाँध द्वारा वर्ष 2024 के दौरान तमिलनाडु के पालामलाई स्थित रामनपट्टी राजकीय जनजातीय आवासीय विद्यालय (प्राथमिक एवं उच्च विद्यालय) में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी प्रकार, सिद्ध क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (एसआरआरआई), पुडुचेरी ने वर्ष 2025 के दौरान पुडुचेरी के जल्ली होम में जनजातीय समुदाय के लिए आयुष जागरूकता एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त, जनजातीय क्षेत्रों में एनीमिया तथा कुपोषण के प्रबंधन हेतु सिद्ध चिकित्सा एवं सिद्ध आहार के माध्यम से जाँच एवं अनुसंधान संबंधी प्रयास किए गए हैं। इसी क्रम में, केंद्रीय सिद्ध अनुसंधान परिषद् (सीसीआरएस) द्वारा जून, 2026 में तमिलनाडु के सलेम स्थित कलरायन पहाड़ियों के एक जनजातीय ग्राम में रक्ताल्पता की जाँच हेतु स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया।

*****